भगवन्नाम – जप के सुसंस्कार

स्वामी डा. विश्वामित्र

(गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ''कल्याण''जनवरी 2006)

जो व्यक्ति स्वेच्छा से व अन्य की प्ररेणा से, हाथ से, पांव से, मन तथा वाणी से इष्टानिष्ट क्रिया करता है, इसे कर्ता कहा जाता है। जिन साधनों से कर्ता कर्म करता है, वे करण कहाते हैं –यदि बाहरी हैं तो उन्हें बाह्य–करण और यदि भीतरी तो उन्हें अन्तःकरण कहा जाता है। कर्ता अपने करणों द्वारा जो शुभाशुभ क्रियाएं करता है, उन्हें कर्म कहा जाता है। मनुष्य जैसे कर्म करता है, उसके मन पर उन कर्मों का सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है जिन्हें संस्कार कहा जाता है। शुभ कर्मों के शुभ संस्कार चित्त पर अंकित हो जाते हैं और अशुभ कर्मों के संस्कार भी अशुभ ही होते हैं। यही संस्कार ही समय पाकर अगामी कर्मों के प्रेरक एवं कर्म–फल का कारण बन जाया करते हैं। जैसे चलचित्र की फिल्म में जो रुप रंग, आकार, जो दृश्य, जो स्वर गीत, वाणी–वचन और जो नाद–वादन भरा गया हो अंकित किया हुआ हो, उसी प्रकार जिन भावों से जो कर्म किये जाते हैं, वैसे ही उन के कर्म प्रकट हुआ करते हैं। अपने किये कर्मों का दायित्व कर्ता पर ही है। प्रत्येक कर्ता में क्रिया करने की स्वतन्त्रता विद्यमान है। आत्म–हत्या केवल मानव ही कर सकता है, अन्य योनियां नहीं कर सकतीं। मनुष्य सत्कर्म–दुष्कर्म, बेईमानी–ईमानदारी करने व झूठ–सच बोलने में पूर्णतया स्वतन्त्र है। विधाता ने तिजारी सौंप चाबी अपने पास नहीं मनुष्य को ही दे दी है। अतः कर्म कैसा करना है, ऐसे निर्णय

की स्वतन्त्रता व्यक्ति को है। किया हुआ कर्म फल दिये बिना रह नहीं सकता। यह सिद्धान्त अटल है – शुभ कर्म का फल शुभ और अशुभ कर्म का फल अशुभ है।

कुछ घटित जीवन्त दृष्टान्तों से यह प्रमाणित होता है कि राम–नाम जप द्वारा व्यक्ति सुसंस्कृत हो कर अपने माथे के कुलेखों को भी बदल लेता है अर्थात कुससंस्कारी भगवन्नाम जप के शुभ–दिव्य संस्कारों द्वारा निन्दनीय न रह कर वन्दनीय बन जाता है। उसके विचारों, उसके आचरण एवं स्वभाव में उल्लेखनीय परिवर्तन प्रत्यक्ष दिखाई देने लगता है।

एक बार सम्राट अकबर एवं बीरबल ने मार्ग में किसी ब्राह्मण को भीख मांगते देखा। राजा ने व्यंगात्मक संबोधन द्वारा मंत्री महोदय को पूछा,'' यह क्या है ?'' बीरबल तीव्र बुद्धि वाले तत्काल उत्तर दिया,'' महाराज ! भूला हुआ है ?'' '' तो इस पंडित को रास्ते पर लाओ'' राजा ने तत्क्षण कहा। ''आ जायेगा, राजन ! समय लगेगा। कृपया तीन माह की अवधि दीजियेगा।'' शाम को बीरबल ब्राह्मण के घर पहुंचे, विद्वान हो कर भीख मांगने का कारण पूछा और कहा, '' ब्राह्मण देवता ! कल से प्रातः चार बजे जागें और मेरे लिये दो घंटे राम नाम जपा करें। शाम को निर्वाह हेतु एक स्वर्ण मुद्रा आप के घर पहुंचा दी जायेगी।'' पिछले जन्म के, कुल के संस्कार थे, चार बजे उठने में जप करने में कोई कठिनाई नहीं। मुद्रायें एकत्रित धनवान हो गये। अभ्यास करते करते राम नाम के दिव्य संस्कारों ने दबे सुसंस्कारों को उभारा। यदि बीरबल के लिए जपने से राम–नाम ने धनाढय बना दिया है तो स्वयं के लिए भी क्यूं न जपूं ? चार

घंटे रोज जप होने लगा। मकान बन गया, परिवार सुखी, हर सुविधा से सम्पन्न हो गया। नाम मीठा लगने लगा, कामनायें शून्य होने लगीं। अतः बीरबल से निवेदन किया,''अब जाप केवल अपने लिये करुंगा, आप कृपा करके स्वर्ण–मुद्रा न भेजें।'' राम–नाम की अराधना ने विवेक वैराग्य जागृत कर दिया, प्रभु भक्ति की लगन लग गई।

ब्राह्मण देवता ने अवसर पाकर पत्नी से कहा, ''देवि! ईश्वर कृपा से घर में सब कुछ है, प्रचुर है, जीवनयापन निर्विघ्न निभ सकता है, आप अनुमति दें तो मैं उद्यान में एकान्त में जप–साधना करना चाहता हूं।'' पत्नी ने सहर्ष स्वीकृति दी। ब्राह्मण सतत रामनामोपासना से राम–रंग में रंगे गये, फूल खिल गया, चेहरा नूरी हो गया। लोग दर्शनानार्थ पधारने लगे, शान्ति का अनुभव करते, मनोकामनायें बिन चर्चा पूरी होती। सूचना राजा तक भी पहुंची, बीरबल सहित इस पहुंचे हुए महात्मा के दर्शन करने पधारे। संत उच्च स्थान पर विराजमान हैं, राजा–प्रजा सब नीचे बिछी चटाई पर आसीन हैं। मनोमोहक शान्त मुख को अपलक निहार रहे हैं अकबर। अद्‌भुत शान्ति लाभ हुई। जाते समय कहा, '' महात्मन ! मैं भारत का बादशाह अकबर आपसे प्रर्थाना करता हूं, यदि आपको किसी भी पदार्थ सामग्री की आवश्यकता हो तो निःसंकोच संदेश भिजवाईयेगा, तत्काल आप की सेवा में पहुंच जायेगी।'' ब्राह्मण मुस्कराये कहा, '' राजन! तेरे पास ऐसा कुछ नहीं जिस की मुझे जरुरत हो, हां यदि तुझे कुछ चाहिये तो मांग लो। जो मुझ से मिलेगा, यहां से मिलगा, वह किसी अन्य से कहीं नहीं मिलेगा।''

भक्ति किसी संत, भक्त एवं आप्त पुरुष से ही मिलती है। बीरबल ने पूछा राजन,''आप ने पहचाना इन्हें, यह वही ब्राह्मण हैं, जो तीन माह पूर्व भीख मांग रहा था।'' राम नाम जप ने भिखारी को सच्चा दाता बना दिया, वास्तविक धन का धनी। राम–नाम के सुसंस्कारों के प्रताप ने लोक परलोक दोनों सुधार दिये। आपने कहा था इसे सुधारो'' तो मैंने पहले स्वर्ण मुद्रिका का प्रलोभन देकर इनसे राम नाम का जाप करवाया और जब इन्हें राम के नाम में रस आने लगा तो इन्होंने स्वर्ण मुद्रा लेना बन्द कर दिया और भगवत्प्रेम के वशीभूत हो जप करने लगे और आज इनका नाम–जप का संस्कार दृढ़ हो गया है। यह सुन कर अकबर को बड़ा आश्चर्य हुआ।

सुसंस्कारों का संचय, कुसंस्कारों के प्रभाव को दबा देता है, मंद कर देता है और कालान्तर में नष्ट भी कर देता है। इस संदर्भ में एक दृष्टांत यहा दिया जा रहा है।

किसी राज दरबार में एक कर्मचारी की पत्नी महारानी की निजी दासी थी। दोनों में अति घनिष्ट सम्बन्ध, पूर्ण अपनापन, दासी इतनी विश्वसनीय, कि रानी कभी उससे कुछ न छिपाती और दासी भी गुह्यतम बातें भी रानी को निर्भयतापूर्वक बतला देती। कुछ दिन से दासी उदास है। पति ने एकदा राजकुमारी को देखा, मुग्ध हो गया, अपनी औकात को भूल कामना–पूर्ति की तीव्र–इच्छा के कारण दुःखी रहता है। पतिव्रता पत्नी पति के दुःख के कारण उदास रहती है। रानी को लगा कुछ छिपा रही है। आज उदासी का कारण पूछा। बारबार पूछने पर सब कुछ बतला

दिया आशा थी दोनों को नौकरी छुट्टी ही नहीं, कड़ा दण्ड भी मिलेगा, किन्तु भक्तिमयी रानी अति बुद्धिमान, सोच विचार कर कहा,'' तू घबरा मत, मैं कन्या देने को तैयार हूं, पर एक शर्त है। नगर की बाह्य सीमा पर हमारा जो बगीचा है, पति उसमें रहे, हर समय राम राम जपे, जो भेजूं वह खाये, छः माह बाद कन्या का हाथ उसके हाथ में दे दूंगी।'' राजकुमारी पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार ने राम राम जपना शुरु कर किया। महल से सात्विक भोजन, दूध, फल निरन्तर जाता। भक्ति में आनन्द आने लगा, नाम जितना जपे, उतना अधिक मधुर लगें अविराम नाम जप से मन–बुद्धि में कुसंस्कारों की धूल धुल गई। दुर्विचार–सद्विचारों में बदल गये। व्यक्ति सन्त–स्वभाव का हो गया, मन पवित्र हो गया। छःमाह पूरे हुए महारानी कन्या सहित पधारीं। दोनों के चरणों पर मस्तक रखा, कहा,''महारानी जी ! इस देवि का विवाह किसी राजकुमार के साथ करें, राम–नाम ने मेरी कुदृष्टि बदल दी और मातृ–भाव जगा दिया। नाम–जप के दिव्य–शुभ संस्कारों ने मेरे वासनामय संस्कारों को दग्ध कर दिया। आप मुझे क्षमा करें, आपने मेरी आंखें खोल दीं। राम से अधिक चमत्कारी है राम का नाम।

सांसारिक सुख पाने के अमिट संस्कार हमारे चित्त में संचित होते रहते है और अक्षय–सुख प्राप्ति की चाह ही उत्पन्न नहीं होने देते। व्यक्ति विषयानन्द में ही आजीवन निमग्न रहता है और भजनानन्द, आत्मानन्द, वास्तविक परम सुख से वंचित रह जाता है। भौतिक सुख रुपी दलदल में फंसे रहना हमारी दुर्बलता बन जाती है। जब प्रलोभन सामने, प्रस्तुत होता है हम झपट पड़ते हैं और निरन्तर और

दुर्बल होते होते पतन को प्राप्त हो जाते हैं। भगवन्नाम के संस्कार हमारे उक्त वर्णित संस्कारों को अभिभूत करके हमें प्रलोभनों के प्रति आर्कषण से बचाते हैं। एक बार का बचाव हमें बलिष्ठ बनाता है और बार बार का बचाव हमें फिर कभी प्रलोभनों में फंसने नहीं देता। इस प्रकार कुसंस्कारों का विध्वंस हो जाता है। साधक उन्हें पुर्नजीवित होने का अवसर न दे।

पावन राम नाम के संस्कार भी पावन, जो भीतरी अपवित्रता को उन्मूल करके उपासक को पावन बना देते हैं और पवित्र, ईमानदार जीवन व्यतीत करने के लिए अढिग रहने का बल देते हैं।

करैसी नोटों का कागज़ होशंगाबाद में बनता है, किन्तु अधिकांश तो विदेश से ही आता है जिसकी जांच यहां होती है। एक राम–नाम के उपासक कागज़ के परीक्षण–अधिकारी के पद पर नियुक्त थे। उनका निर्णय अन्तिम निर्णय होता। एक पूरे **lot** में निरीक्षण पर कमी पाई गई, अस्तु साधक ने उसे पास न (स्वीकार) न किया। उच्चतर अधिकारियों ने समझाया, ''झंझट में न पड़ो, जैसा है वैसा ही पास कर दो।'' साधक न माना। विदेशी अधिकारियों ने दबाव भी डाला एवं लालच भी दिया, किन्तु साधक पर राम–नाम जप के शुभ संस्कार प्रभावी थे, वह न भयभीत ही हुआ और न ही प्रलोभन में न फंसा। फलतः पूरा लॉट **(lot reject)** अस्वीकार हो गया। कार्यालय से लौट कर साधक ने अपने पिता श्री से चर्चा की, पिता ने कहा,''इतने बड़े बड़े अफसर एवं हमदर्द कह रहे थे तो उनका कहना

मान लेना था''। साधक ने निवेदन किया, ''नहीं पिता श्री ! राम–नाम के उपासक में गल्त को गल्त कहने का साहस न हो, ईमरानदारी पर अडिग रहने का बल न हो, तो किसमें होगा ? सामान्य व्यक्ति तो बेईमानी के कुसंस्कारों से प्रेरित होता है, परन्तु उपासक तो परम शुचिता के संस्कारों से सम्पन्न कभी सन्मार्ग से च्युत नहीं होता। राम–नाम ईमानदारी सिखाता है, अतः साधक न स्वयं और न ही किसी के कहने पर गल्त काम करता है। सुदृढ़ता के लिए बल देता है राम। इसी के भरोसे जो सही था, राम–नाम लेकर कर दिया। आगे की राम जाने।'' साधक की सच्चाई के कारण, उसे बीस अधिकारियों का अतिक्रमण **(supercede)** करके पदोन्नति मिली, वेतन में वृद्धि मिली और कई अन्य पुरस्कार भी मिले। इस प्रकार सच्चाई एवं ईमानदारी के सुसंस्कारों का फल लोक एवं परलोक दोनों में मिलता है। साथ ही साथ राम नाम के दिव्य संस्कार जापक को दिव्य बना देते हैं और उसे दिव्यता वितरित करने योग्य भी बना देते हैं।